प्रकृति पर मानव का हस्तक्षेप

प्रकृति एक वरदान है। कहा जाता है कि "NATURE IS A GIFT OF GOD", यानि भगवान का दिया हुआ एक वरदान, एक देन है प्रकृति। प्रकृति में मानव के लिए सारी सुविधाएँ है। एक मनुष्य के जन्म से लेकर उसकि मौत तक वह प्रकृति पर निर्भर है। उसका खाना, पीना, रहना सब कुछ भी प्रकृति का ही देन है। हमारी माँ धरती हमें बहुत कुछ सिखाती है। वह हमारे आवश्य के अनुसार सब सहती ही। चाहे मनुष्य उसे कितना भी छोट पहुचाए, धरती सब सहती है। आज की पीढी प्रकृति के खिलाफ जा रही है। वह अपने स्वार्थता के अनुसार चलते है। इंसान प्रकृति की कद्र नही करते।

वे अपने स्वार्थता के अनुसार उनका जीवन बिताते है। एक बार प्रकृति की ओर देखे तो हमे पता चलेगा कि प्रकृति का विनाश हो रहा है। पेड़ काटे जा रहे है। मकानो को लगाए जा रहे है। क्यो? क्या इसका उत्तर किसीके पास नही? स्वार्थता, यही इसका कारण है। मानव अपने चाहत, अपने स्वार्थता पर ज्यादा जोर देते है। वे सोचते तक नही की प्रकृति पर यह कितने बूरे तरह से असर करते है।

मानव ही कहते है - "IF YOU CUT ONE TREE, PLANT THREE" अगर एक पेड़ काटा जाया तो उसके बदले तीन पेड़ और लगाना है। लेकिन आज की पीढी तो पेड़

को काटे जा रहे हैं, काटे जा रहे हैं और बदले में एक भी पेड़ नहीं लगाते। हमारी धरती गर्म हो रही है। क्योंकि धरती का विनाश हो रहा है। मानव अपनी जिम्मेदारी को नहीं निभाते हैं। अगर निभाते होते तो आज यह नौबत नहीं आती। कहा जाता है कि "प्रकृति का विनाश खुद का विनाश है"। प्रकृति को अगर मनुष्य तबा करेगा तो मनुष्य ही खुद तबा हो जाएगा। सबसे बड़ा उदाहरण है - केरल की बाढ़, केरल की बाढ़ ने तो पूरी तबाही मचा दी थी। उस बाढ़ के कारण कितने लोगों की जान चली गई। कितने लोग बेघर हो गए। परन्तु इस सबका कारण मनुष्य की प्रवृत्ति ही है।

मनुष्य ने प्रकृति का विनाश किया और प्रकृति ने वापस। लेकिन फिर भी मानव नहीं समझता है। अगर समझता होता तो आज सबको यह सब सहना नहीं पड़ता। दिल्ली, आज सबसे प्रदूषित शहर बन चुका है। लोग घर के बाहर भी नहीं निकल पा रहे हैं। वहाँ के लोगों ने दिल्ली को इतना प्रदूषित कर लिया कि वहाँ लोगों को साँस लेने तक तकलीफ होती है। मनुष्य यह क्यों नहीं समझता की प्रकृति की रक्षा करना हम सबका कर्तव्य है। हमारे भगवान खुद यह कहते हैं। भगवदगीता में श्री विष्णु भगवान खुद अपने शिष्य अर्जुन से कहते हैं। कि हमारा धर्म हमारा कर्तव्य निभाना होता है।

आज किसी से भी पूछे कि तुम्हे कौन बनना है, तो उनका उत्तर होगा डॉक्टर, टीचर, सी ए वगैरे। क्या कोई भी कहेगा कि मुझे किसान बनना है। हमारी प्रकृति की रक्षा करना है। कोई नही होगा। खास कर केरल में तो कोई भी नही होगा। आज का समाज इतना आगे बढ चुका है कि उसे पर्यावरण की कद्र नही है। सारे लोग अधुनिक और माध्यमो के पीछे जा रहे है। अगर ऐसा ही चलता रहा तो आने वाली पीढी को बहुत तकलीफ होगी। माध्यमो के पीछे जाने के बजाए अगर हम प्रकृति का ध्यान रखे तो वह मनुष्य के लिए बहुत फायदेमंद होगा।

पुराने ज़माने में तो लोग प्रकृति को अपने जीवन के समान उसका ख्याल रखते थे। इसी वजह से आज की पीढ़ी हमारे प्रकृति का लाभ उठा रही है। हम सोच भी नहीं सकते एक ऐसे ग्रह की जहाँ पर कुछ भी नहीं है। ना पेड़ ना पौधे, खना जंगल भी नहीं। सब कुछ सूखा सूखा। परन्तु अगर मनुष्य ऐसा ही करता है तो एक न एक दिन मानव को ऐसा एक दिन देखना ही होगा। आज भी देर नहीं हुई है। अगर सोचे तो प्रकृति को हम अपने पुराने अवस्था में ला सकते हैं। जैसे कि हम जानते हैं कि हमारे प्रधानमंत्री मोदी जी ने "स्वच्छ भारत" नामक योजना शुरू किया।

उससे हमारी प्रकृति कितनी साफ हुई। वह बस मोदी जी एक सोच थी। एक छोटी सी सोच। लेकिन उससे कितने लोगों का फायदा हुआ। हमारा भारत स्वच्छ हुआ। अगर सब मिलकर एकता मे सोचे कि हम अपने प्रकृति को साफ रखेगे। पोडो को नही काटेगे तो कितना अच्छा। बनाये अभी के लोग तो मोबईल के शिकार हो चुके। इनका सोच सिर्फ माध्यमों की ओर है। ओर तो ओर जिन्दगी को असान बनाने के लिए वह प्रकृति के बारे मे सोचते तक नही। कितने स्वार्थ हो गये है मनुष्य। क्या उन्हे प्रकृति की चिन्ता नही। उस मिट्टी की चिन्ता नही जिनपर

वह बड़े हुए। जिनपर वह जी रहे हैं। समाज प्रकृति के विरुद्ध क्यों जा रहा है।

मनुष्य तो प्लास्टिक के इस्तमाल से धरती को प्रदूषित कर रहे हैं। प्लास्टिक मिट्टी में खुलता नहीं तो इसके कारण प्रकृति प्रदूषित होती है। ज़िन्दगी को आसान बनाने के लिए बहुत सारे साधन का निर्माण मनुष्य ने किया है। लेकिन उन सबसे प्रकृति की दिशा तबाही की ओर चली गई है। गाडियों से आते हुए धुएं से हवा प्रदूषित होता है। गाडियों और कुछ माध्यमों के कारण ध्वनि प्रदूषण भी पैदा होता है। प्रकृति की कद्र न करते

मनुष्य के कारण पानी प्रदूषित होता है। पानी में डाले हुए कचरे के कारण ही यह होता है। धरती में सिर्फ निन्यान्वे प्रतीशत पानी पीने लायक नहीं है। सिर्फ एक प्रतीशत पानी ही पीने लायक है। और अगर उस पानी को भी हम गंदा करे तो पानी ही नहीं होगा।

आज की मनुष्य की ऐसी सोच है कि पैसा कमाना है आराम दायक ज़िन्दगी बितानी है। अगर हमारे पूर्वज इस सोच से उनकी ज़िन्दगी बिताते तो आज मानव जो साधनों का मज़ा ले रहा है उस सबके आधा प्रतीशत भी नहीं होता।

हम कहते हैं कि हमारा भारत आगे बढ रहा है। परन्तु सच यह है कि भारत कर्तव्य के नाम पर बहुत पीछे रह गए हैं। अमेरिका या अन्य राज्य में जाए तो पता चले कितनी हरियाली है। वहाँ ज़्यादातर मकान ही है लेकिन फिर भी वहाँ का पेड़ पौधों की रक्षा वहाँ के लोग करते हैं।

एक अच्छा इंसान होने के नाते एक अच्छा भारत वासि होने के नाते हमें अपने भारत, हमारे धरती, हमारे पर्यावरण की रक्षा करना चाहिए। प्रकृति हमारे लिए सब कुछ करती है तो हम प्रकृति के लिए कुछ क्यों नहि कर सकते? प्रकृति के कारण ही मानव इस

भूगोल पर है। प्रकृति से ही हमारा जन्म हुआ है।

आज भी देर नहीं हुई है। बस एक छोटी सी सोच की कमी है। वह सोच कि हम सब एक है। वह सोच कि प्रकृति की रक्षा करना हम सबका कर्तव्य है।

"LEND A HELPING HAND TOWARDS NATURE".

आओ सब मिलकर पर्यावरण की रक्षा करे। इस प्रकृति को बचाए। "SAVE NATURE SAVE FUTURE" यानि प्रकृति को बचाओ अपने भविष्य को बचाओ।